Notification No : 575/2025
Date of Award: 28/02/2025

Name of the scholar : Jugnu Kumari
Name of the supervisor: prof. Durga Prasad Gupt
Name of Department/Faculty:Hindi,Faculty of Humanities and Language,JMI
Topic of the Research: HINDI NAVJAGRAN KE SANDARBH MEIN KARMENDU SHISHIR KE NAVJAGRAN SAMBANDHI KARYA KA ADHYAYAN

KEYWORDS: bhartiya navjgaran, hindi navjagran, patrkarita, navjgaran patrkarita aur saarsudhanidhi, hindi navjgaran me lok sanghrash aur hindi sahitay

Finding

समाज की प्रत्येक परिस्थिति; समय के अनुसार परिवर्तित होती रहती है और यह परिस्थितियां केवल समाज नहीं बल्कि साहित्य को भी परिवर्तित करते हैं। जिस प्रकार यूरोप में 15वीं-16वीं शताब्दी में एक नवीन चेतना का उदय हुआ, जिसे 'रेनेसां' के नाम से जाना जाता है; इसने समाज और साहित्य दोनों को ही नवीन चेतना प्रदान की। यही नवीन चेतना भारतीय इतिहास में 19वीं शताब्दी के उतरार्ध में उदय हुई, जिसने वर्षों की पुरानी रूढ़ियों,परम्परों के विरुद्ध जागरण की उद्घोषणा की और इसे ही, भारतीय इतिहास में 'नवजागरण' का नाम दिया गया। समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और प्राचीन ज्ञान की भूमि भारत ने अपने पूरे इतिहास में कई परिवर्तनों का अनुभव किया है। देश की इस यात्रा में सबसे महत्वपूर्ण आंदोलनों में से एक नवजागरण रहा है, जिसका अर्थ है 'नई जागृति'। नवजागरण भारत के पुनरुत्थान और पुनरुद्धार का प्रतीक है, जो अपने गौरवशाली अतीत को पुनः प्राप्त करने और एक समृद्ध भविष्य को आकार देने की सामूहिक इच्छा से प्रेरित है। नवजागरण ने पर्याप्त रूप से भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक ताने-बाने, आर्थिक विकास और वैश्विक स्थिति को प्रभावित किया है। हिंदी नवजागरण आंदोलन इस भाषाई हाशिए की एक प्रमुख प्रतिक्रिया के रूप में उभरा। इसने हिंदी को सांस्कृतिक गौरव और राष्ट्रीय पहचान की भाषा के रूप में पुनः स्थापित करने का प्रयास किया। महावीर प्रसाद द्विवेदी, भारतेंदु हरिश्चंद्र, शिवप्रसाद, रामधारी सिंह दिनकर आदि जैसी प्रमुख हस्तियों ने हिंदी साहित्य को पुनर्जीवित करने और इसे सामाजिक सुधार और सांस्कृतिक कायाकल्प के माध्यम के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हिंदी नवजागरण आंदोलन ने हिंदी साहित्य को पुनर्जीवित और आधुनिक बनाने पर ध्यान केंद्रित किया। लेखकों और कवियों ने देशभक्ति, सामाजिक न्याय और व्यक्तित्व के विषयों की खोज शुरू की। उन्होंने अपने कार्यों में राष्ट्रीय गौरव और पहचान की नई भावना भर दी, जिससे भारतीयों में एकता की भावना को बढ़ावा मिला।

कर्मेंदु शिशिर के हिंदी नवजागरण संबंधी चिंतन की शुरूआत समकालीन बोध से ही होती है। उनका मानना है कि हिंदी नवजागरण को लेकर हुए अध्ययन आज भी अधूरे हैं, जोकि सत्य भी है। दरअसल यह एहसास ही उन्हें नवजागरण को लेकर जिज्ञासु और संधान की ओर प्रेरित करता है। वह मानते हैं कि आज भी हिन्दी नवजागरण से जुड़ा साहित्य अध्ययन की धूरी से काफी दूर है। दरअसल वर्तमान में एक प्रमुख समस्या भारतीय समाज का विभिन्न वर्गों में विभाजित होना भी है। जिसकी जड़े अतीत में दबी पड़ी है। यह दबी जड़े ही आज भारत के विकास को अवरूद्ध कर रही है।

ऐसे में वर्तमान समस्याओं का समाधान भी अतीत के संधान द्वारा संभव है। ऐसा कर्मेंदु शिशिर का मानना है। इसीलिए वह नवजागरण के गहन एवं सही अध्ययन को वर्तमान समस्याओं के निदान रूप में प्रस्तुत करते हैं।